N. D. Machhar

International Peer-Reviewed Referred Journal

Surabhi

ISSN : 2349 : 4557
Impact Factor : 4.5
Vol-4
June - 2023
75th Issue

Editor
Mr. Rohit Parmar

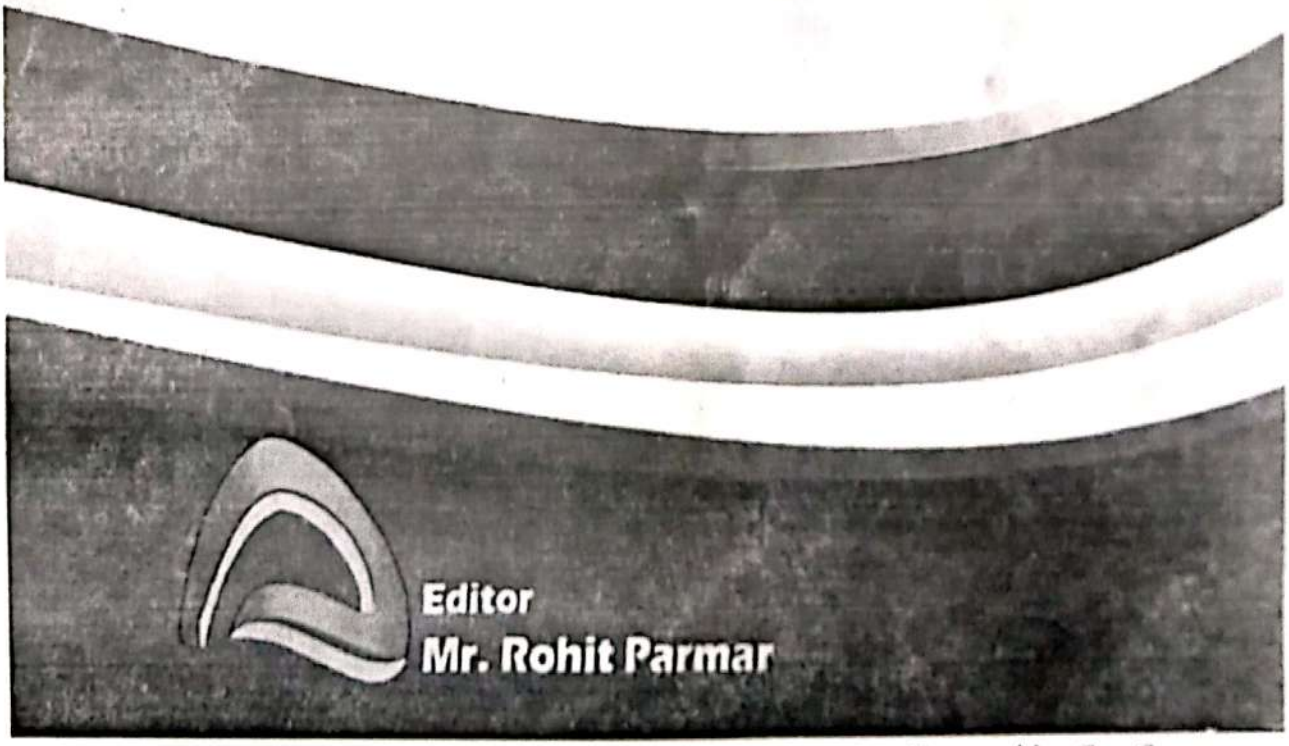

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

Index

1. ભારતમા ભૂમિહીન ખેતમજૂરોની આર્થિક સમસ્યાઓનો અભ્યાસ
અરવિંદભાઈ રઈજીભાઈ ચૌહાણ.....1

2. ભારતમાં વેટલેન્ડના સંરક્ષણ માટે સરકારની ભૂમિકાનો એક વિશ્લેષણાત્મક અભ્યાસ
Devyani Hareshbhai Solanki.....6

3. Indian Historical Fictions and Collective Memory
Jaydip P. Patel.....12

4. The Future of Corporate Social Responsibility (CSR) in India
Dr. Jignesh K. Soni.....14

5. हबीब तनवीर के 'आगरा बाज़ार' नाटक में लोक तत्व
डॉ. तृप्ति डी. वाघेला.....16

6. त्यागपत्र' में मनोविज्ञान एवं मनोविश्लेषणवा
डॉ. मनोजकुमार डी. सोंदरवा.....19

7. વિશ્વશાંતિનો અભિનવ માર્ગ ગાંધીજી : નારાયણ દેસાઈના મતે...
માયાબેન સવજીભાઈ ડાંગર.....21

8. ડો. બી. આર. આંબેડકર એક ભારતીય અર્થશાસ્ત્રી
મયૂરભાઈ મનુભાઈ મેર.....28

9. શ્રીમદ ભાગવત ના દસમા સ્કન્ધના આધારે ભગવાન શ્રીકૃષ્ણની લીલાઓ
જગદીશકુમાર એ. ચૌહાણ.....32

10. राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में आर्थिक पराधीनता
पृथ्वीराजसिंह जशुभा राणा.....35

11. अभी न होगा कविता का संदेश
डॉ. आशा सी. पटेल.....38

12. પ્રમુખ ઉપનિષદમાં અનુશાસન
મહેશભાઈ ગોરધનભાઈ પરમાર.....40

13. CHALLENGES IN DIGITAL MARKETING IN INDIA
Dr. Ritu & Dr. Neha Bishnoi.....44

14. The Rising voice of Silent Suppression in Subaltern Short Stories of Harish Mangalam
Dr. Bijal Nanavati.....50

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

15. धार्मिक क्रियायों की वैज्ञानिक पद्धति
डॉ. धीरेन्द्र मिश्रा.....55

16. संघर्ष स्त्री का अपनी अस्मिता एवं अस्तित्व के लिए ('छिन्नमस्ता' उपन्यास के संदर्भ में)
डॉ. कंचन डी. डेर.....60

17. રાષ્ટ્રનો સ્વાતંત્ર્ય સંગ્રામ અને ગુજરાતનાં દલિતો
લલિત કે. વાઘેલા.....63

18. સ્ત્રીસશક્તિકરણમા શિક્ષણનું મહત્વ
મયુરી જીવરાજભાઈ વધેરા.....68

19. श्रीमद्देवीभागवतपुराण में देवी अथवा शक्ति तत्त्व का दार्शनिक अनुशीलन
नाथाभाई डी. मछार.....71

20. Popular Fiction in The Light of Paulo Coelho's "The Alchemist" and "Eleven Minutes"
Megha Trivedi.....74

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

ISSN 2349:4557
Vol-4

श्रीमद्देवीभागवतपुराण में देवी अथवा शक्ति तत्त्व का दार्शनिक अनुशीलन

नाथाभाई डी. मछार
आसि.प्रोफेसर
संस्कृत विभाग
एन.एस.पटेल आर्ट्स (ऑटोनोमस) कॉलेज,आणंद

भूमिका -

भारतीय संस्कृत साहित्य में पुराणों का अप्रतिम महत्व है | संस्कृत साहित्य नहीं अपितु सम्पूर्ण भारतीय वाङ्मय में अष्टादश पुराण अष्टादश रत्न के समान है | भारतीय जीवनदर्शन में धार्मिक एवं साहित्यिक दृष्टि से समाज के कल्याणार्थ इसके प्रत्येक पावन स्तोत्रस्विनी अजस्र धाराएँ प्रवाहित हुई, जो अत्यंत मानवजीवनोपयोगी सिद्ध हुई | भारतीय जनमानस शाश्वत चिंतन समग्रता में अटूट विश्वास रखता है | भारतीय आध्यात्म चिंतन का विकास भारतीयदर्शन के अनेक सम्प्रदायों में भिन्न भिन्न रूपों में हुआ है | भारतीय मनीषियों ने जीवन के एक पक्ष पर ही नहीं अपितु सभी पक्षों पर व्यापक रूप से वैचारिक दृष्टिकोण से किसी तथ्य को उद्घाटित करते थे | इन्हीं मनीषियों में से एक है कृष्णद्वैपायन वेदव्यास जिनकी अलौकिक प्रतिभा के सम्मुख विश्व के प्रतिभाशाली विद्वान भी नतमस्तक हुए |

सभी पुराणों में प्रायः ज्ञान और भक्ति के साथ साथ सृष्टि के आरम्भ के विषय में सभी पुराणों के सारगर्भित विचार प्रस्तुत हुए है | इस तथ्य पर यदि सूक्ष्मरूप से विचार किया जाये तो सृष्टि-प्रसंग में एक तथ्य तो स्पष्ट ही हो जाता है कि बिना युग्मशक्ति के सृष्टि हो ही नही सकती है | जब ब्रह्मा आदि त्रिदेव भी पराम्बा भगवती की आज्ञानुसार सृष्टि, पालन एवं संहारकार्य शक्ति के सान्निध्य के आभाव में नहीं कर सके तो भला और जीवो के लिए क्या कहा जा सकता है भगवान और भगवती, शिव और शक्ति, अथवा अर्धनारीश्वर आदि ये सब सम्मिलित रूप ही सृष्टि की लीला के नियन्ता है | इसी प्रकार उत्पत्ति-क्रमके मुलमें नर-नारी का सम्मिलित प्रयास ही सफल होता है यही शाश्वत एवं प्रामाणिक तथ्य है |

देवीभागवत नामक इस महापुराण की गणना अष्टादस पुराणमें अद्वितीय है |महर्षि कृष्णद्वैपायन वेदव्यासजीने द्वादस स्कन्धो को तीन सौ अठारह अध्यायोंमें पराम्बा की लीलाओ से सबंधित अठारह हजार सुन्दर श्लोको को इस पुराणमें निबंद्ध किया है |

शक्ति अथवा देवी का दार्शनिक स्वरूप –

भारतीय दार्शनिको ने देवी भागवत के 'शक्तितत्त्व' को विशेष महत्त्व दिया है |स 'शक्तितत्त्व' के विषयमें कहा गया है कि जो कुछ निर्विशेष शुद्ध तत्त्व सम्पूर्ण ब्रह्मांड का आधार है उसी को पुरुषत्वदृष्टि से 'चित' और स्त्रीत्वदृष्टि से 'चिति' कहते है | शुद्ध चेतन एवं शुद्ध चिति एक ही तत्त्व के दो नाम है उसी तत्त्व की जब पुरुष रूपमे उपासना की जाती है तब उसे इश्वर ,शिव अथवा भगवान आदि नामो से पुकारते है और जब स्त्री रूप से उसकी उपासना करते हे तो उसे इश्वरी, दुर्गा, अथवा भगवती कहते है | इस प्रकार शिव – गौरी, राम – सीता, कृष्ण – राधा,तथा विष्णु – लक्ष्मी,ये परस्पर अभिन्न ही है | इनमे वस्तुतः कुछ भी भेद नही है केवल उपासना के दृष्टि भेद से इनके नाम और रूपों में भेद माना जाता है |[1]

शांकरवेदांत में भी शक्ति के प्रभाव को देखा जा सकता हे | इसमें ब्रह्मा, विष्णु, इश्वर, जीव, माया तथा जगत इत्यादि से सबंदित विचार अत्यंत प्रभावित करता है |

देवी शब्द का अर्थ शक्ति होता है यह शक्ति शब्द जिसे शिव का ही रूप माना जाता है निर्विकार रूप से शिव एवं शक्ति दोनों एक है | अर्थात शिव कि शक्ति को ही देवी कहते है |

पौराणिक ग्रंथो में पराम्बा भगवती दुर्गा के इसी शक्ति रूप की उपासनादी का विधान है |

सा च ब्रह्मस्वरूपा च नित्या सा च सनातनी |
यथात्मा च तथा शक्तिर्यथाग्नौ दाहिका स्थिता: || (२)

Scanned with CamScanner

ISSN 2349:4557
Vol-4

शक्ति ही परब्रह्म है | वह नित्य है | सनातनी है | जिस प्रकार अग्निमें विद्यमान दाह्यत्व - शक्ति अग्नि से अभिन्न है | शक्ति शक्तिमान से अभिन्न है | चिदात्माशक्ति चिदात्मा से अभिन्न है उसी प्रकार यह शक्ति शिव से अभिन्न है | वस्तुतः अर्धनारीश्वर का भी यह रहस्य है | वह सब कुछ एक ही है जो सर्वत्र शक्ति रूप में परिणत हो रहा है | शक्ति और शक्तिमान में स्त्री – पुरुष का भेद करना उचित नहीं है | अतः यह स्पष्ट है कि शिव और शक्ति दोनों एक ही तत्त्व है इसमें लेशमात्र भी सदेह नहीं है |

देवी भागवत में देवीको जगत के कारणों के कारण स्वरूपा, हरि के हृदय में बिराजमान रहने वाली,देवमयी मूर्ति, वेदों के प्रमाण को जानने वाली, देवताओ की आराध्या, परब्रह्म परमेश्वरी महान भाग्यशालिनी, महामाया, महादेव प्रिया, ज्येष्ठा, महानन्दा, महोत्सवा, महामारी, दधिता, शरणागत – वत्सला, त्रिनेत्री एवं गौरी आदि कहा गया है | आदि अंत रहित तेजपूंजा, कीर्ति, प्रभृति स्मृति सर्वस्व यही देवी है[३] |

सा नित्या सर्वदैवास्ते देवकार्यार्थसिद्धये |
नानारूपा त्वेकरूपा जायते कार्यगौरवात् || (४)

यह नित्य स्वरूपा है | देवताओ की कार्य सिद्धि के निमित्त एक होते हुए भी नट की भाती नानारूपों को धारण करती है | निर्गुण अरुपा होते हुये भी अपनी लीलासे सगुणरूप में प्रकट होती है | यह विश्वेश्वरी, विश्वजननी, जीवन की भी इश्वरी है | यह सच्चिदानन्द रूपिणी है | देवी ही अलौकिक रूप लावण्ययुक्त सर्वसुलक्षण संपन्ना दिव्य वस्त्राभूषण माल्य चन्दनादी से विभूषित रहती है | यह अत्यंत कोमल, विश्व की इश्वरी तथा कृपासागर है |

देवी भागवत में स्थल स्थल पर देवीके लिए भुवनेशी, भुवनेश्वरी, परमेश्वरी आदि विशेषणों का प्रयोग किया गया है | जगत के मूल कारण के रूप में देवी को मूल प्रकृति, परमा प्रकृति, महामाया इत्यादि भी कहा गया है | एक स्थल पर देवी का सर्व शक्ति स्वरूपा, अक्षरा, अजेया आदि रूप में वर्णन है |[४]

मान्ये पूज्ये जगद्धात्री सर्वमंगलमंगले |
तवत्कटाक्षावलोकेन पद्मभू: सृजते जगत् || (६)

सर्वोच्च ओर सर्वश्रेष्ठ देवता के रूप में देवी की कल्पना उन संदर्भो से स्पष्ट हो जाती है जिनमे विभिन्न प्रकार से अन्य देवोसे देवीकी श्रेष्ठता बतायी गयी है और समस्त देवो से उन्हें सर्वोपरि कहा गया है | ब्रह्मा, विष्णु, शिव आदि उन्ही के आज्ञापालक कहे गये है देवीके कटाक्ष मात्र से ब्रह्मा सृष्टि करते है | विष्णु पालन करते है तथा रूद्र संहार करते है | इन्ही की आज्ञा से इन्द्र त्रिकोकी के शाशक है यमराज प्राणियो को दंड देते है और कुबेर निधिपतित्व करते है | नैतऋत वायु, इशान – यह सब देवी की शक्तिसे ही परिवृहित होते है और जलचर का पालन करते है | देवी की ही कृपा से ब्रह्मा वेद निधि और चन्द्रमा के स्वामी हुइ है | देवी भागवत में एक स्थल पर प्रश्न उठाया गया है कि कौन प्रधान है और इसका समाधान भी किया गया है कि ब्रह्मा शिव नहीं अपितु देवी ही प्रधान देवता के रूप में स्वीकार की जा सकती है क्योकि शक्ति के बिना ब्रह्मा, विष्णु और महेश कोईभी कार्य सिद्ध नही कर सकते है | देवी ही आदि माया महाशक्ति, एवं परम पुरुष के साथ रहकर कार्य संपादित करने वाली प्रकृति है | ब्रह्म के साथ इनका अभेद सम्बन्ध है और ये सम्पूर्ण प्राणियो एवं देवताओ की जननी है | इनका कभी जन्म मरण नही होता है | यह पूर्णतामयी देवी है और प्राणियो में व्याप्य रूपसे विराजमान रहती है | वैष्णवी शाम्भवी, ब्राह्मी, वासवी, वारुणी, वाराही, नारसिंही, तथा अद्भुत महालक्ष्मी इनके नाम है | इन्ही से वेद प्रकट हए है, यही विद्या कहलाती है इन्ही के आधार पर संसार रूपी वृक्ष तिका हुआ है और यह अभीष्ट दायिनी है |[५]

कई स्थलों पर विभिन्न देवताओ के द्वारा देवी की स्तुति की गयी है | विष्णु ने दैत्यों से रक्षा के निमित्त देवी से प्राथना की है और में देवी के लिए विद्याश्री, कामधात्री आदि शब्दों का प्रयोग किया है | अन्यत्र विष्णुने स्वयं कहा है की देवी की इच्छासे ही वे युगयुग में कच्छप, वामन, वराह, नृसिंह आदि निम्न योनी में अवतार लेते है |[६]

देवी की श्रेष्ठता के ज्ञापन और विश्व व्यापक रूप को स्पस्ट करने के लिए भिन्न भिन्न स्थलों पर उनके विराट स्वरूप का वर्णन कियां गया है जिसमे सम्पूर्ण सृष्टि, सम्पूर्ण लोक, सम्पूर्ण देव मंडल, स्थावर जंगम सभी स्थित बताये गये है |

एक स्थल पर देवी को श्रेष्ठ बताने के लिए उपनिषदों की शैली में ओंकार की व्याख्या करते हए ब्रह्मा, उकार –हरि, मकार स्वयं रूद्र और अर्धमात्रा माहेश्वरी है | इसी कारण विद्वानोंने ब्रह्मा की अपेक्षा विष्णु, विष्णु की अपेक्षा रूद्र और रूद्र की अपेक्षा तुरीयरूपिणी माहेश्वरी श्रेष्ठ कहा है जो अर्धमात्रा किसीसे भी उच्चरित नही होती वही नित्य रूपा देवी है |

Scanned with CamScanner

ISSN 2349:4557
Vol-4

देवो की अपेक्षा देवीका उत्कर्ष दिखने के लिए एक अत्यंत सुन्दर व सरल तर्कका माध्यम लिया गया है | वह यही तर्क है जिसमे न केवल दार्शनिक स्तर पर देवी की महत्ता बढाने में सहायता दी अपितु अनेक देवियो का एक देवीकी कल्पनामे एकीकरण में भी | इस तर्कका शक्ति शब्दके अर्थसे घनिष्ठ सम्बन्ध था, देवता अपने आपमें निर्जीव व निष्क्रिय है, वे अपनी शक्तिसे ही शक्तिमान है | शक्तिके आभाव में ब्रह्मा, विष्णु, महेश कोईभी कार्य सिद्ध नही कर सकते | यदि शक्ति न हो तो संसार का कोई भी प्राणी हिल डुल नही सकता | दौबल्य के कारण मानव शक्तिहीन हो जाता है विष्णुहीन या रुद्रहीन नही | सृष्टि स्थति तथा प्रलय के हेतु देवीने ही ब्रह्मा, विष्णु व रूद्र को प्रकट किया है ओर शक्ति संपन्न किया है | शक्ति हीन होने पर ये देवता भी निष्क्रिय हो जाता है |[९]

विद्यार्थी पूजनं यस्तु करोति नियतेन्द्रियः |
अनवद्यां शुभां विद्यां विन्दते नात्र संशयः || (१०)

देवी की असीम शक्तिमत्ता और कल्याणकारीरूप का आभास उन स्थलों से होता है जहा देवी भक्तोको अभय देती हुयी दिखाय गयी है | देवीके भक्तको पीड़ा पुहचाने वाला कोईभी सुखी नही रह सकता है| भक्तसे प्रसन्न होने पर देवी मनोवांछित फल देती है | वे अज्ञानी को ज्ञान, ज्ञानियो को भक्ति, धर्मार्थी को धर्म, कामी को काम, अर्थी को अर्थ, निर्धन को धन, संतानहीन को सत्पुत्र, राज्यभ्रष्ट राजा को राज्य तथा रोगीको स्वास्थ्य प्रदान करती है | एषा कहा गया हे की जो पुरुष एक वारभी देवी की पूजा कर श्रद्धा से चरणांमृत ग्रहण कर लेता है उसे कभी भी गर्भावास नही करना पड़ता | जो भक्तिभावसे देवीकी उपासना करता है उसे दिव्य देह प्राप्त होती है, उसके पापोका क्षय होता है तथा पिशाचाकृति से मुक्ति मिलती है देवीके गुण वर्णित एकभी शब्द सुन लेनेसे अश्वमेध यज्ञ का फल प्राप्त होता है | भगवतीका ध्यान करने से मोक्ष प्राप्ति अंत्यंत सरल हो जाती है | जो मानव देह प्राप्त करभी देवी की उपासनासे विमुख रहता है वह विभिन्न अंगोंसे क्षीण, अनेक रोगोंसे संतप्त,धन धान्य हीन और नरकगामी होता हैं इस जीवनमें जो सुखी और संपन्न है उन्होंने पूर्व जन्ममें पुण्य, बिल्वपत्र आदि द्वारा अवश्य देवीकी अर्चना की होगी |

उपसंहार –

भारतीयदर्शन के इतिहास को देखनेसे यह ज्ञात होता है की भारतीयदर्शन में वेदों- उपनिषदों तथा पुराणों का सदा सर्वदासे प्रभाव रहा है | पौराणिक वाङ्गमय में प्रस्तुत पुराण प्राचीनतम साहित्य होने के बाद भी अपने आपमें ही नही अपितु विश्वकल्यानार्थ एक अमूल्य एवं अमूल्य कृति है | इसके प्रत्येक भाग में अनादिकालसे वर्तमान समय तक कुछभी एषा नही है जो शिक्षाप्रद ना रहा हो, अर्थात निश्चित रूपसे कुछना कुछ शिक्षा अवश्य ही मिलाती रहती है | यह पुराण मनुष्यके लिए मनोहारी, हृदयस्पर्शी, रूचि जाग्रत करने के साथ साथ उस कल की प्रचलित संपूर्ण कलाओ, विद्याओ एवं ज्ञान को स्वयं में संग्रहित किए हुए है | सम्पूर्ण जगत में सृष्टि काल की विकास –प्रक्रिया विषयक ज्ञान का प्रकाशन जितने रहस्यमय ढंग से पुराणों में वर्णित हुआ है उसकी तुलना में किसी अन्य साहित्यिक ग्रंथो अथवा वैदिक ग्रंथों में नही हुआ है | पुराण ही एकमात्र एषा साहित्य है जिसमे संपूर्ण विद्याओ को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रकाशित किया है |

संदर्भग्रन्थ-

(1) 'शंकराचार्य के शक्तिवाद सिद्धांतो का अध्ययन' -पृ -१६५-१६६
(2) श्रीमद्देवीभागवतपुराण – पण्डित रामतेज पाण्डेय, चौखंबा संसकृत प्रतिष्ठान दिल्ली -पृ -१०३०
(3) तदेव -पृ – ९५९ – ९६०
(4) तदेव -पृ – ४९०
(5) तदेव -पृ – ५८०
(6) तदेव -पृ – १३१७
(7) तदेव -पृ – २०३
(8) तदेव -पृ – ५८-५९
(9) तदेव -पृ – २२४ – २२५
(10) तदेव -पृ – ६१४ – ६१५

Scanned with CamScanner